



वेस्टर्न ब्राउन और हिप स्नेक भी दिखे, यात्रियों को सतर्क करने चेतावनी संकेत लगाए

कैनबरा

आस्ट्रेलिया में भीषण गर्मी पड़ रही है। इस मौसमी बदलाव का एक अप्रत्याशित परिणाम आस्ट्रेलिया के एलिस रिपिंग्स एयरपोर्ट पर देखने को मिल रहा है, जहां गर्मी बढ़ने के साथ सांप बिलों से निकलकर बाहर आ रहे हैं।

यात्रियों को अब फ्लाइट पकड़ने के साथ-साथ एयरपोर्ट के अंदर सांपों से भी सावधान रहना पड़ रहा है। टर्मिनल, यात्रियों के चेक-इन एरिया, क्वांटास एयरलाइन के लॉर्डज और यहां तक कि आफिस में भी सांप नजर आ रहे हैं। सांप पकड़ने वाले विशेषज्ञ ने एयरपोर्ट के कई हिस्सों से सांप पकड़े हैं। इनमें यात्रियों के आने-जाने वाले रास्ते और चेक-इन एरिया शामिल हैं। सबसे ज्यादा चिंता तब बढ़ी, जब टर्मिनल के अंदर दो बहुत ही जहरीले वेस्टर्न ब्राउन स्नेक मिले। इनमें से एक सार्वजनिक जगह पर था, जबकि दूसरा कर्मचारियों के आफिस में मिला। वेस्टर्न ब्राउन स्नेक बहुत जहरीला होता है और इसके काटने से गंभीर खतरा पैदा हो सकता है। एयरपोर्ट के आसपास व्हिप स्नेक भी देखे गए

हैं, जिन्हें आमतौर पर वेस्टर्न ब्राउन स्नेक से कम खतरनाक माना जाता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सांपों के एयरपोर्ट के अंदर आने की बड़ी वजह आस्ट्रेलिया के नार्दर्न टेरिटरी इलाके में पड़ने वाली भीषण गर्मी है। तापमान बढ़ने पर सांप दिन के सबसे गर्म समय में छांव और ठंडी जगह तलाशते हैं। एयरपोर्ट की इमारतों में उन्हें छिपने की सुरक्षित जगह मिल सकती है, साथ ही पानी या भोजन मिलने की संभावना भी उन्हें अंदर आने के लिए आकर्षित कर सकती है। सांप को किसी इमारत में छिपने की जगह मिलती है, तो वे वहां भी पहुंच सकते हैं। इसका मतलब यह जरूरी नहीं कि इलाके में सांपों की संख्या अचानक बढ़ गई है, बल्कि मौसम के हिसाब से उनकी

गतिविधियां बदलती हैं। एयरपोर्ट का संचालन करने वाली कंपनी ने उन जगहों पर निगरानी बढ़ा दी है, जहां सांप दिखने की आशंका है। यात्रियों को सतर्क करने के लिए चेतावनी वाले संकेत लगाए जाते हैं और जरूरत पड़ने पर प्रशिक्षित स्नेक कैचर बुलाए जाते हैं। एयरपोर्ट कर्मचारियों को सांपों से बचाव की ट्रेनिंग भी दी जा चुकी है। उनके मुताबिक उन्हें एयरपोर्ट के अंदर या परिसर में सांप से जुड़े किसी हमले में घायल हुए व्यक्ति की जानकारी नहीं है। विशेषज्ञों को सलाह है कि सांप दिखने पर उसके पास न जाएं, उसे पकड़ने की कोशिश न करें और उसका रास्ता भी न रोकें। एयरपोर्ट के अंदर सांप दिखाई देने पर तुरंत कर्मचारियों को सूचना दें।

न्यूज़ ब्रीफ

ट्रंप ने कहा नेतन्याहू को पीएम चुनें, वे कमी निराश नहीं करेंगे



वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इजरायल के प्रधानमंत्री बेजामिन नेतन्याहू को उनके दोबारा प्रधानमंत्री बनने के लिए अपना पूरा और खुला समर्थन दिया है। ट्रंप ने इजरायल के लोगों से सीधे अपील की है कि वे नेतन्याहू को फिर से चुनें। उन्होंने साफ शब्दों में कहा, बीबी नेतन्याहू आपको कभी निराश नहीं करेंगे। ट्रंप ने यह समर्थन ट्विथ सोशल पर इजरायलियों को संबोधित एक लंबी पोस्ट के जरिए व्यक्त किया। इस पोस्ट में उन्होंने नेतन्याहू को महान योद्धा प्रधानमंत्री बताते हुए उनकी जमकर तारीफ की। ट्रंप के अनुसार, नेतन्याहू एक बहुत मजबूत और बहादुर लीडर हैं, जिन्होंने कई तरह के विरोध और दबाव का सामना करने के बावजूद मजबूती से अपनी बात रखी और मुश्किल हालात में और भी मजबूत बनकर उभरे। पूर्व राष्ट्रपति ने अपने पोस्ट में साफ किया कि वे नेतन्याहू को आगेले चुनाव में पूरा समर्थन दे रहे हैं। उन्होंने लिखा कि नेतन्याहू हमेशा इजरायल के लोगों के हित में काम करते रहे हैं और दबाव में भी अपने फैसलों से पीछे नहीं हटे, बल्कि देश की सुरक्षा को प्राथमिकता देते रहे। इस दौरान ट्रंप ने एक बड़ी चेतावनी भी दी। उन्होंने कहा कि अगर इजरायल ने नेतन्याहू के अलावा किसी और को प्रधानमंत्री चुना, तो अमेरिका को ईरान के खिलाफ लड़ाई अकेले ही लड़नी पड़ सकती है। ट्रंप ने स्पष्ट किया कि वे ऐसा रास्ता नहीं अपनाना चाहते और चाहते हैं कि इजरायल मजबूत लीडर के साथ ईरान का सामना करे। ईरान को लेकर भी ट्रंप ने सख्त बयान दिया। उन्होंने दावा किया कि ईरान अब सैन्य और आर्थिक दोनों मोर्चों पर कमजोर हो चुका है।

कनाडा के सैन्य अड्डे पर लगी आग, चार सैनिकों की मौत



ओटावा (कनाडा)। कनाडा के अल्बर्टा प्रांत में स्थित सैन्य अड्डा (कैनेडियन फोर्सज बेस वेनराइट) में लगी आग में चार सैनिकों की मौत हो गई। इसकी पुष्टि कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने की। उन्होंने कहा कि दर्जनों अन्य लोग गंभीर रूप से झुलस गए हैं। उन्होंने इस घटना विवरण तलब किया है। सीबीएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, अल्बर्टा की प्रीमियर डेनियल स्मिथ ने 39 लोग अभी भी अस्पताल में भर्ती हैं। इनमें से कम से कम 19 की हालत गंभीर है। स्मिथ ने बताया कि पीड़ितों को कैनेडियन फोर्सज बेस वेनराइट से अल्बर्टा के चार अलग-अलग अस्पतालों में स्थानांतरित किया गया है। मृतकों में सार्जेंट मार्गन वोग, शान फ़ैरेल, एडन गोल्डिंग और हेडन लाइकेमार्क शामिल हैं। रक्षामंत्री डेविड मैकगुइर्टी ने कहा, मुझे यह बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि बेस पर हुई एक घटना में कुछ लोगों की मौत हुई है और कई लोग घायल हुए हैं। प्रथम कैनेडियन डिवीजन के कमांडर मेजर-जनरल वेड रटलैंड ने बताया कि प्रशिक्षण अभ्यास के दौरान घास में लगी आग तेजी से फैल गई। आग लगने के शुरुआती कारणों की जांच चल रही है। रटलैंड ने बताया कि आग पर नियंत्रण पा लिया गया है।

चर्च में मृत्यू की बात कर रहे पादरी के सिर पर गिरा ईसा मसीह का क्रॉस, लाइव प्रसारण के दौरान दर्दनाक मौत

गुआयाक्विल। इक्वाडोर के गुआयाक्विल शहर स्थित एक चर्च में उस वक़्त एक बेहद दर्दनाक हादसा हो गया, जब लाइव स्ट्रीमिंग के दौरान एक कैथोलिक पादरी के ऊपर अचानक ईसा मसीह का एक भारी लकड़ी का क्रॉस गिर गया। यह घटना बीते 17 अक्टूबर को न्यूस्ट्रा सेनोरा डेल परपेटुआ ओसोकोर चर्च में हुई, जिसमें पादरी पैट्रिक अल्फ़्रेडो सांचेज मोलिनारी की मौके पर ही मौत हो गई। पूरा हादसा कैमरे में कैद हो गया और सोशल मीडिया पर इसका वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। रिपोर्ट्स के अनुसार, हादसे से ठीक पहले पादरी मृत्यू और जीवन की नयवरता के विषय पर उपदेश दे रहे थे। वीडियो में देखा जा सकता है कि पादरी चर्च में खड़े होकर लोगों को संबोधित कर रहे थे, तभी दीवार पर लगा भारी क्रूसीफिक्स अचानक अपनी जगह से उखड़कर सीधे उनके सिर पर आ गिरा। चोट इतनी गंभीर थी कि उनकी तुरंत मौत हो गई और वहां चीख-पुकार मच गई। जिस समय यह दर्दनाक घटना हुई, उस समय चर्च की प्रार्थना सेवा का सोशल मीडिया पर सीधा प्रसारण किया जा रहा था। हजारों लोगों ने इस भयावह दृश्य को वास्तविक समय में देखा, जिससे सभी को झकझोर कर रख दिया। कैथोलिक प्रशासन ने बाद में पादरी सांचेज मोलिनारी के निधन की आधिकारिक पुष्टि की। उनके सोशल मीडिया अकाउंट पर एक भावुक पोस्ट साझा करते हुए लिखा गया, हमारे प्रिय पादरी पैट्रिक अल्फ़्रेडो सांचेज मोलिनारी ईश्वर के पास चले गए हैं। प्रभु उन्हें शाश्वत शांति प्रदान करें और उनके आसपास सदैव प्रकाश बना रहे।

फ्लाइट में हड़कंप : बम की धमकी के बाद बुल्गारिया में इमरजेंसी लैंडिंग

तेल अवीव

तेल अवीव से वियना जा रही आस्ट्रियन एयरलाइंस की एक फ्लाइट में उड़ान के दौरान बम होने की सूचना मिलने से हड़कंप मच गया। आनन-फ़ानन में विमान को बुल्गारिया की राजधानी सोफिया में आपातकालीन स्थिति में उतारा गया। यह घटना 19 अक्टूबर, 2026 को सामने आई, जब एक महीने पहले ही तेल अवीव से जुड़ी एक और फ्लाइट को क्रैश कराने की कोशिश की गई थी।

जानकारी के मुताबिक, एयरबस ए320 विमान तेल अवीव से वियना के लिए रवाना हुआ था। उड़ान के दौरान बम की खबर मिलने से यात्रियों और क्रू मेंबर्स में अफ़रा-तफ़री मच गई। रिपोर्ट्स के अनुसार, विमान में संयुक्त राष्ट्र में भाषण देने जा रहे एक गणमान्य व्यक्ति भी शामिल थे। विमान में कुल 6 क्रू मेंबर्स और 51 यात्री सवार थे। बम की धमकी की सूचना क्रू को तब मिली जब विमान रोमानियाई सीमा के पास पहुंचा। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बुल्गारियाई वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने उड़ान भरी और एयरबस ए320 को सोफिया में सुरक्षित लैंडिंग तक एस्कार्ट किया। इजरायली मीडिया के अनुसार, यात्रियों को एक अज्ञात स्रोत से विमान में बम होने की खबर दी गई थी, जिसके बाद विमान के डेक पर एक संदिग्ध वस्तु देखे जाने से लोग सहम गए। सुरक्षा अलर्ट जारी कर इमरजेंसी सिग्नल भेजा गया। सोफिया में देर रात लैंडिंग के बाद सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। सोफिया एयरपोर्ट पर एक क्राइसिस मैनेजमेंट टीम तैनात कर दी गई है और मामले की विस्तृत जांच जारी है। यह घटना ऐसे समय में हुई है जब करीब एक महीने पहले ही दुबई से तेल अवीव जा रही फ्लाइटदुबई की एक फ्लाइट को क्रैश कराने की कोशिश की गई थी। उस हादसे में करीब 180 लोगों की जान बाल-बाल बची थी। इसी बीच, उस घटना में विमान को सुरक्षित बचाने वाले भारतीय कैप्टन स्मिथ मच्छर को इजराइल के राष्ट्रपति इसाक हर्ज़ोग ने प्रेसिडेंशियल अवार्ड फ़ार सिविलियन हीरोइज़्म से सम्मानित करने के लिए इजराइल आमंत्रित किया है। कैप्टन मच्छर 30 सितंबर को अपने सह-पायलट द्वारा विमान क्रैश करने की कोशिश को नाकाम करते समय गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उस विमान में 174 यात्री और चालक दल के छह सदस्य सवार थे।



अमेरिका में एक साल में 4800 बच्चे पुलिस हिरासत में, मनोवैज्ञानिकों ने जताई चिंता

न्यूयॉर्क। दुनिया को आधुनिक शिक्षा, मानवाधिकार और बच्चों के अधिकारों का पाठ पढ़ाने वाले अमेरिका के स्कूलों में विद्यार्थियों के साथ होने वाले व्यवहार पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। एक साल में लगभग 4800 बच्चों को पुलिस हिरासत में लिए जाने और उनके हाथों में हथकड़ियां कसने और सजा देने का विरोध अमेरिका में हो रहा है, टेक्सास में छात्रों के खिलाफ 47 हजार से अधिक मामले दर्ज होने के आंकड़े शिक्षा व्यवस्था की संवेदनशीलता पर सवाल खड़े करते हैं। आखिर स्कूल बच्चों को शिक्षित करने के केंद्र हैं, या उन्हें दंडित करने की व्यवस्था का हिस्सा बनते जा रहे हैं स्कूलों में अनुशासन बनाए रखना आवश्यक है, लेकिन अनुशासन के नाम पर बच्चों के साथ कठोरता, अपमानजनक व्यवहार और पुलिस कार्रवाई उनके मानसिक विकास को प्रभावित करती है। बयानप सीखने, गलतियों में सुधार करने और व्यक्तित्व विकसित करने का समय होता है। ऐसे में छेटी गलतियों पर बच्चों को अपराधियों की तरह व्यवहार करना उनके आत्मविश्वास को कमजोर करता है। मनोवैज्ञानिकों की चिंता मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, बच्चों के साथ लगातार कठोर व्यवहार होने पर उनमें भय, तनाव, आक्रामकता और असुरक्षा की भावना बढ़ सकती है। स्कूल में पुलिस की कार्रवाई का सामना करने वाले बच्चों के मन में शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। इसका असर उनकी पढ़ाई, सामाजिक व्यवहार और भविष्य पर पड़ने की आशंका रहती है। विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों की गलतियों को सुधारने के लिए परामर्श, अभिभावकों की भागीदारी और सकारात्मक अनुशासन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पुलिस कार्रवाई केवल गंभीर परिस्थितियों में ही उचित प्रक्रिया के तहत होनी चाहिए। व्यवस्था के सामने बड़ा सवाल टेक्सास में दर्ज मामलों और बच्चों की हिरासत के आंकड़ों की प्रकृति, अवधि तथा कारणों की विस्तृत जांच जरूरी है। हर मामला अपराध का प्रमाण नहीं होता। हालांकि, ये आंकड़े इस सवाल को गंभीर बनाते हैं, बच्चों की सुरक्षा और अधिकारों की रक्षा के लिए स्कूलों में कितनी प्रभावी व्यवस्था है। शिक्षा का उद्देश्य भय पैदा करना नहीं, बल्कि संवेदनशील, जिम्मेदार और आत्मविश्वासी नागरिक तैयार करना होना चाहिए। बच्चों में उम्र के अनुसार नई-नई चीजों को जानने की प्रवृत्ति होती है, उनमें ऊर्जा होती है ऐसी स्थिति में उनका समाधान बच्चों की मानसिक स्थिति और उसकी शारीरिक ऊर्जा को देखते हुए किए जाने की जरूरत है।

अमेरिका के पूर्वोत्तर राज्यों के तटीय इलाकों में बाढ़ से हालात बिगड़ने की आशंका



वाशिंगटन। अमेरिकी नेशनल वेदर सर्विस (एनडब्ल्यूएस) के अनुसार, तूफान के कारण आने वाले दिनों में अमेरिका के पूर्वोत्तर राज्यों के तटीय इलाकों में बाढ़ आ सकती है। एनडब्ल्यूएस के बयान में कहा गया कि लगातार चलने वाली तेज समुद्री हवाओं के कारण तटीय इलाकों में मध्यम स्तर की बाढ़ आ सकती है। स्थिति खतरनाक हो सकती है और समुद्रीय तटों में कटाव हो सकता है। माना जा रहा है कि यह हालात हफ्ते के मध्य तक बने रहेंगे, जिससे दक्षिणी न्यू जर्सी से लेकर उत्तरी कैरोलिना के तट तक का एक बड़ा हिस्सा प्रभावित होगा। कुछ इलाकों में हवा की गति 20 मीटर प्रति सेकंड (लगभग 45 मील प्रति घंटे) से भी ज्यादा हो सकती है। एनडब्ल्यूएस ने चेतावनी दी है कि हालात बिगड़ रहे हैं और स्थिति और भी गंभीर हो सकती है। इस बीच, फाक्स न्यूज ने रिपोर्ट दी है कि उत्तरी कैरोलिना और वर्जीनिया के कुछ तटीय इलाकों में जलस्तर सामान्य से एक मीटर से भी ज्यादा ऊपर जा सकता है। उत्तरी कैरोलिना के एक द्वीप पर स्थानीय लोगों को वहां से सुरक्षित निकालने के आदेश पहले ही दिए जा चुके हैं।

अमेरिकी जनता की राय में भारत निचले पायदान पर, रूस-चीन के साथ खड़ा

वाशिंगटन

हाल ही में एक व्यापक सर्वेक्षण प्रकाशित किया है, जिसमें जी-20 देशों के प्रति अमेरिकी नागरिकों की धारणाओं का खुलासा हुआ है। यह सर्वे तब आया है जब अमेरिका स्वयं दिसंबर में मियामी में आगामी जी-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी की तैयारी कर रहा है। इस सर्वेक्षण के निष्कर्षों ने कई लोगों को हैरान किया है, विशेषकर भारत के प्रति अमेरिकी जनता के दृष्टिकोण को लेकर चौकाने वाली बात सामने आई है। आंकड़ों से पता चला है कि अमेरिकी नागरिकों ने भारत को जी-20 देशों में रूस, चीन और सऊदी अरब जैसे देशों के साथ निम्न पायदानों पर रखा है, जबकि ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया और जापान जैसे पारंपरिक सहयोगियों को कहीं अधिक प्राथमिकता दी गई है।

रिपोर्ट के अनुसार, चीन को अमेरिकियों ने औसतन 100 में से 37 अंक दिए, जबकि रूस को महज 27 अंक मिले, जो सभी जी-20 देशों में सबसे कम था। रूस के प्रति अमेरिकी जनता का रवैया विशेष रूप से बहुत खराब रहा, जिसमें 51 प्रतिशत उरुदादाओं ने इस श्रेणी को चुना। यह चीन के प्रति बहुत ठंडा दृष्टिकोण रखने वाले करीब एक तिहाई लोगों की तुलना में कहीं अधिक है। सऊदी अरब भी उन देशों में शामिल रहा जिसके प्रति अमेरिकी जनता की राय काफी नकारात्मक थी। सर्वेक्षण में यह स्पष्ट रूप से रेखांकित हुआ कि रूस और चीन अमेरिकी नागरिकों द्वारा प्रमुख खतरों के रूप में देखते हैं।

इसके विपरीत, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान और इटली जैसे देशों को



अमेरिकी नागरिकों द्वारा सबसे अच्छी रेटिंग मिली। इन देशों का औसत स्कोर 60 से 65 के बीच रहा, जो उनके प्रति सकारात्मक और मैत्रीपूर्ण दृष्टिकोण को दिखाता है। कनाडा को 48 प्रतिशत बहुत

गर्म और आस्ट्रेलिया को 42 प्रतिशत बहुत गर्म रेटिंग मिली। यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, दक्षिण कोरिया और फ्रांस जैसे अन्य देशों ने अपेक्षाकृत सकारात्मक औसत रेटिंग प्राप्त की,

जिससे अमेरिका के पारंपरिक पश्चिमी और कुछ एशियाई सहयोगियों के प्रति मजबूत भावनाएं परिलक्षित होती हैं। भारत के लिए सर्वेक्षण के आंकड़े विशेष रूप से ध्यान खींचने वाले हैं। केवल 9 प्रतिशत अमेरिकियों ने भारत के साथ बहुत मजबूत या बहुत गर्म संबंध महसूस किए, जबकि 19 प्रतिशत ने कुछ हद तक गर्म संबंधों को इंगित किया। वहीं, 15 प्रतिशत अमेरिकियों ने भारत के साथ संबंधों को कुछ हद तक ठंडा बताया और 20 प्रतिशत ने बहुत ठंडा रवैया दिखाया है। यह भारत के उन देशों की श्रेणी में रखता है जिन्हें इंडोनेशिया, अर्जेंटीना और तुर्की के साथ-साथ चीन, रूस और सऊदी अरब के बाद कम सकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाता है।

हालांकि, चीन के प्रति अमेरिकी दृष्टिकोण अभी भी समग्र रूप से नकारात्मक बना हुआ है, लेकिन 2021 के बाद से इसकी रेटिंग में थोड़ा सुधार हुआ है। 2021 में औसत 28 से बढ़कर यह 37 हो गई है, संभवतः कुछ राजनयिक प्रवासों या जनता की राय में बदलाव को दर्शाता है। यह सर्वेक्षण इस बात पर प्रकाश डालता है कि अमेरिकी जनता की धारणाएं जटिल हैं और अक्सर भू-राजनीतिक गुठलबंधनों या रणनीतिक महत्व के साथ पूरी तरह से मेल नहीं खाती हैं, खासकर जब बाद भारत जैसे तेजी से महत्वपूर्ण होते राष्ट्र की आती है। यह सर्वे अमेरिका की विदेश नीति निर्माताओं के लिए उन भावना को समझने और उसके अनुसार अपनी रणनीतियों को समायोजित करने के लिए महत्वपूर्ण संकेत देता है।

मेहरदाद अखलाघी केताबची ईरान के रक्षामंत्री नियुक्त, संसद ने दी मंजूरी

तेहरान (ईरान)

एयरोस्पेस तकनीक और सैन्य औद्योगिक उत्पादन के विशेषज्ञ मेहरदाद अखलाघी केताबची को ईरान का रक्षामंत्री नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति ऐसे समय पर की गई जब अमेरिका के साथ युद्ध के और तेज होने की आशंका है। 68 वर्षीय अखलाघी को संसद की आनलाइन बैठक में मंजूरी मिली। 28 फरवरी को ईरान पर अमेरिका-इजराइल के बाद से संसद की बैठकें आनलाइन हो रही हैं। अखलाघी रक्षा और सशस्त्र बल लाजिस्टिक्स मंत्रालय की कमान संभालेंगे। उनकी नियुक्ति के पक्ष में कुल 237 सांसदों ने वोट दिया, जबकि 15 ने इसके खिलाफ मतदान किया।



अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, इस पद पर कुछ समय से आसीन माजिद इब्न-ए रजा अब अखलाघी के डिप्टी (सहायक) के रूप में काम करेंगे। अखलाघी पर ईरान के सैन्य औद्योगिक ढांचे को फिर से बनाने और उसका विस्तार करने की जिम्मेदारी होगी, जिसे अमेरिका और इजराइल ने अपने हमलों में बुरी तरह निशाना बनाया है। नए मंत्री को रक्षा योजनाओं को पहले ही वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों, राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान और संसद के राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति आयोग से मंजूरी मिल चुकी है।

राष्ट्रपति पेजेशकियान ने कहा, इस्लामिक रिपब्लिक आफ ईरान किसी भी देश के खिलाफ आक्रामकता की शुरुआत नहीं करेगा, लेकिन अगर कोई हमला होता है तो वह देश को क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए पूरी ताकत से और आखिरी दम

तक लड़ेगा। राष्ट्रपति ने कहा कि अखलाघी के पास रक्षा मंत्रालय और उससे जुड़े संगठनों में 42 वर्षों से अधिक का अनुभव है। सरकारी मीडिया के अनुसार, उनकी मुख्य विशेषज्ञता बैलिटिस्टक मिसाइलों, सॉलिड फ्यूल प्रोपल्शन (ठोस ईंधन प्रणोदन), एयरोस्पेस तकनीक और सैन्य औद्योगिक उत्पादन में है।

इससे पहले, उन्होंने शहीद बाघेरी इंस्ट्रियल ग्रुप, एयरोस्पेस इंस्ट्रूजि आर्गनाइजेशन और डिफेंस इंस्ट्रूजि आर्गनाइजेशन के प्रमुख के रूप में काम किया है। अखलाघी और ये सभी संगठन अमेरिकी प्रतिबंधों के दायरे में आते हैं। उन पर संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंध भी लागू हैं। तस्नीम के अनुसार, ये पिछले कुछ दशकों में कई तरह की मिसाइलों और हथियारों के विकास से जुड़ी परियोजनाओं को विकसित करने में शामिल रहे हैं। कहा जाता है कि अखलाघी ने ईरान की प्रमुख सच्चील और जोलफाघार बैलिटिस्टक मिसाइल श्रेणियों के विस्तार के साथ-साथ अलमास मिसाइलों और यासीन गाइडेड बमों जैसे सटीक निशाना लगाने वाले हथियारों (प्रेसिजन-गाइडेड हथियारों) को विकसित करने में अहम भूमिका निभाई है। यह भी कहा जाता है कि उन्हें स्पेस लान्चर, रिसर्च राकेट और सेमनान स्थित इमाम खुमैनी स्पेस सेंटर से जुड़े बुनियादी ढांचे में विशेषज्ञता हासिल है। ये सभी ईरान के इजराइल और अमेरिका के खिलाफ युद्धों में महत्वपूर्ण तत्व रहे हैं।

हालांकि, चीन के प्रति अमेरिकी दृष्टिकोण अभी भी समग्र रूप से नकारात्मक बना हुआ है, लेकिन 2021 के बाद से इसकी रेटिंग में थोड़ा सुधार हुआ है। 2021 में औसत 28 से बढ़कर यह 37 हो गई है, संभवतः कुछ राजनयिक प्रवासों या जनता की राय में बदलाव को दर्शाता है। यह सर्वेक्षण इस बात पर प्रकाश डालता है कि अमेरिकी जनता की धारणाएं जटिल हैं और अक्सर भू-राजनीतिक गुठलबंधनों या रणनीतिक महत्व के साथ पूरी तरह से मेल नहीं खाती हैं, खासकर जब बाद भारत जैसे तेजी से महत्वपूर्ण होते राष्ट्र की आती है। यह सर्वे अमेरिका की विदेश नीति निर्माताओं के लिए उन भावना को समझने और उसके अनुसार अपनी रणनीतियों को समायोजित करने के लिए महत्वपूर्ण संकेत देता है।